रूहानी बाप बच्चों से पूछते हैं कि अपने को आत्मा निश्चय करके बैठे हो? बाप रोज़–2 कहते हैं कि अपने को आत्मा निश्चय कर बैठो। हम तो आत्मा हैं, ना कि शरीर हैं। आत्मा ही पढ़ती है। आत्मा ही शरीर द्वारा कहती है कि मैं आत्मा हूँ। बाप बार–2 कहते हैं कि जितना अपने को आत्मा समझेंगे उतना बाप की याद आवेगी। हम दैवी स्वराज्य में थे फिर क्षत्रिय,वैश्य,शूद्र। अब हम ब्रह्मा(ब्राह्मण) बने हैं, फिर देवता बनेंगे। यह भी जानते हो हमने 84 का चक्र लगाया है। अब फिर बाप से वर्सा लेना है। पढ़ते–2 अब यह बुद्धि में आ गया है। 84 का चक्र पूरा हुआ। बस। आखरीन मनमनाभव ही जाकर रहेगा। बीच में यह समझानी है। इनको छोड़कर .....में जाकर ठहरते हैं। अब तुम बच्चों को सृष्टि चक्र भी समझाया है। अब पावन बनने (लिए) बाप को याद करो। दिन–प्रतिदिन सूक्ष्म होते जाओ। अब यह फिर छोड़ना है। बाबा की याद से ही पावन बनना है। कितना याद करेंगे उतना खुशी का पारा चढ़ेगा। जैसे आशिक–माशूक की दिल लग जाती है ना। तुम्हारी भी दिल लग जावेगी। भले शरीर निर्वाह अर्थ कर्म भी करना है। यह पुरुषार्थ ही है गुप्त। दूसरा कोई नहीं जानते हैं। यह भी समझाते रहते हैं कि मनुष्य कब रचता–रचना की आदि,मध्य,अंत का राज़ समझा नहीं सकते हैं। तुम बच्चे जानते हो कि अभी पुरुषोत्तम संगमयुग है। हम उत्तम ते उत्तम बनते हैं। सतोप्रधान थे, अब तमोप्रधान बने हैं। यह मनुष्यों को रियलाइज करवाना होता है। अब तुम सिवाय याद के पावन बन नहीं सकेंगे। बाप कहते हैं यज्ञ,तप,दान,पुण्य आदि यह सब भक्तिमार्ग हैं। इनसे दुर्गति को पाते हो। भक्तिमार्ग के चित्र आदि जो भी हैं उनको भूल जाना है। बाप करैक्ट करके समझाते हैं। पिछाड़ी में यह सब भूलते जाना है। सिवाय एक बाप के और कोई कुछ भी काम में नहीं आवेगा। बस, हमको तो बाप को याद करना है। जितना याद करेंगे उतना पावन बनेंगे। पावन बन जावेंगे, शांतिधाम में चले जावेंगे। फिर आकर 84 जन्म भोगेंगे। बाकी नालेज है बीच का पोजीशन। आदि और अंत में ही बात है मनमनाभव की। बाप शिव भी भारत में ही जन्म लेते हैं। तुम जानते हो भारत स्वर्ग था। दूसरा कोई खंड नहीं था। अभी तो कितने मनुष्य, कितने ही खण्ड हैं। बाप ने समझाया है कि अभी तुम संगम पर हो। बाकी तो सब कलियुग में हैं। कुम्भकरण की नींद में सोये हुये हैं। शास्त्रों की बातों में अटके हुये हैं। इसको ही कहा जाता है अज्ञान का घोर अंधेरा। भक्तिमार्ग घोर अंधेरा मार्ग है। ज्ञान घोर सोझरा। दिन और रात। ड्रामा चल रहा है। तुम पुरुषार्थ कर रहे हो। फिर रात खतम हो जावेगी। आधा–2 है ना। फिर लाखों वर्षों की बात हो ही कैसे सकती है? यह सब भक्तिमार्ग में भूले हुये हैं। अभी तुम अभूल बनते हो। भक्तिमार्ग में अनेक मतमतांतर हैं। कोई के मत क्या हैं, कोई की क्या है। गाया भी हुआ है कि ईश्वर की गत–मत न्यारी। जो सर्व का सदगति दाता है श्रीमतभगवानोवाच्य। सर्व की सदगति हो जावेगी। सब शांतिधाम में चले जावेंगे। बाकी तुम फिर आकर राज्य करेंगे। सतयुग में तो थोड़े ही होंगे। कहाँ तो आठ/दस लाख और कहाँ पर 500 करोड़। अब तुम ब्राह्मणों का झाड़ है। सूर्यवंशी–चंद्रवंशी राजधानी बहुत बड़ी स्थापन हो रही है। बाप पढ़ा रहे हैं। बेहद का टीचर है ना। जो थोड़ा भी सुनेगा वो प्रजा में आ जावेगा। बाप समझाते हैं कि बीच की समझानी दी जाती है। ब्रह्मा सो विष्णु। फिर विष्णु सो ब्रह्मा। चित्र जो बनाते हैं उनका बाबा हिसाब बताते हैं। चढ़ती कला सेकेंड में जीवनमुक्ति। बच्चे कहते भी हैं कि हम नर से नारायण बनते हैं। संगम पर पुरुषोत्तम बनते हैं। इसलिए ही सुंदर फिर श्याम कहा जाता है। भारत भी श्याम और सुंदर है। स्वर्ग में कितने सुंदर होते हो। शिवालय है। वैश्यालय को सुंदर नहीं कहेंगे। काम चिक्षा पर बैठकर जल मरते हैं। अच्छा, बच्चों को बाप वा दादा का मात वा पिता का लाडले–2 बच्चों को यादप्यार और गुडमार्निंग।